❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तवेद्धि सख्यमस्तृतम्।

ऋग्वेद 1/15/5

हे प्रभो! आपकी मित्रता अटूट और अमृत है।

O Lord ! your friendship is ever lasting and divine.

वर्ष 39, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 जुलाई, 2016 से रविवार 24 जुलाई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

तीनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं - दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब की स्वीकृति के बिना

नहीं हो सकता गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का सरकार को हस्तान्तरण

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दिया स्पष्ट निर्देश : परिवर्तन से पूर्व लें प्रायोजक संस्थाओं की स्वीकृति

आर्यजनों को विदित ही होगा कि गत वर्ष सरकार के कुछ आदेश/निर्देशों की गलत व्याख्या करते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय प्रशासन ने अपनी मातृ संस्थाओं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को जानकारी दिए बिना तथा स्वीकृति लिए बिना गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को सरकार को सौंपने का अवैध एवं अवैधानिक प्रयास किया था। सभाओं को इस प्रयास की जानकारी मिलते ही सभा अधिकारियों ने इस कार्य को रुकवाने के लिए यू.जी.सी. एवं मानव संसाधन विकास मन्त्रालय से पत्र व्यवहार किया, ज्ञापन दिए तथा कई बार अधिकारियों से भी मिले। आर्य सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी से भी सभा अधिकारी मिले थे। उन्होंने भी आर्यसमाज की इस ऐतिहासिक और गरिममयी संस्था के चारित्रिक बदलाव लाने के इस प्रयास का विरोध करते हुए इसमें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी, मन्त्री मा. रामपाल जी एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने भी हस्तांतरण के विरोध में अपना पत्र यू.जी.सी एवं भारत सरकार को भेजा।

सभा अधिकारियों के अथक प्रयास एंव सरकार के आदेश से हस्तांतरण का यह कार्य अब सम्भव नहीं है। आदेश में स्पष्ट लिखा है कि हस्तान्तरण के लिए विश्वविद्यालय की प्रायोजक संस्थाओं अर्थात् तीनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं की स्वीकृति एवं अनापत्ति होना आवश्यक है। इस हेतु कुलसचिव को लिखे पत्र, जिसकी प्रतिलिपि तीनों सभाओं को प्रेषित की गई है, की प्रति आपके अवलोकनार्थ यहां प्रकाशित की जा रही है। आर्य जगत को हम पुन: विश्वास दिलाते हैं कि आर्य जगत की आन-बान-शान गुरुकुल कांगड़ी से सम्बन्धित सभी पक्षों का सम्मान और ध्यान रखते हुए विश्वविद्यालय को आर्यसमाज के संगठन से इतर नहीं जाने दिया जाएगा। अनेक महानुभावों का इस कार्य में सहयोग प्राप्त हुआ है हम उनका आभार व्यक्त करते हैं।

आर्य जगत की ओर से एम.एच.आर.डी. एवं यू.जी.सी. का हार्दिक धन्यवाद

Kundla Mahajan
Under Secretary

Ph. 011-23604431 (O)
www.ugc.ac.in

By Speed Post

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-110 002
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
BAHADURSHAH ZAFAR MARG
NEW DELHI-110 002

11 JUL 2016
July, 2016

No.F. 43-1/2009 (CPP-I/DU)

The Registrar
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
PO. Gurukul Kangri,
Haridwar – 249404,
Uttarakhand.

Subject : Submission of MoA/Rules in accordance with the UGC (Institutions Deemed to be Universities) Regulations, 2010 as amended from time to time.

Sir,

With reference to your letter No. GKV/Estt. 179 dated 18.06.2016 on the subject cited above, I am directed to invite your attention to the Government of India, Ministry of HRD letter No. F. 13-11/2015 U3(A) dated 14th September, 2015 (copy enclosed) wherein the Ministry has clarified the procedure for approval of MoA/Rules.

As per the procedure approved by the Ministry, the first stage clearance for the MoA/Rules has to be given by the Management of the Sponsoring Society/Trust of the Institution Deemed to be University. After clearance from the Sponsoring Society/Trust, the MoA is then sent to the UGC for approval.

In view of the above, you have to first take clearance of the MoA/Rules from your Sponsoring Society/Trust and then send it to the UGC for its approval. Please refrain from taking any policy decision till such time you receive the approval of the MoA/Rules from the UGC.

Yours sincerely,

(Kundla Mahajan)
Under Secretary

Copy to:-

1. Shri Rampal, General Secretary, Arya Pratinidhi Sabha Haryana, Pt. Jagdeosingh Siddhanti Bhawan, Dayanand Math, Rohtak, Haryana.
2. Shri Vinay Arya, General Secretary, The Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15, Hanuman Road New Delhi – 110 001.
3. Shri Sudarshan Sharma, President, Arya Prattinidhi Sabha Punjab, Gurudutt Bhawan, Gurudutt Road, Chowk Kishanpura, Jalandhar – 144004.

(Kundla Mahajan)
Under Secretary

दिल्ली के आर्य पुरोहित-धर्माचार्य संगोष्ठी का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के माननीय पुरोहितों/धर्माचार्यों की पूर्णकालिक संगोष्ठी **रविवार 24 जुलाई, 2016 को आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के वातानुकूलित सभागार में प्रात: 10:45 बजे से सायं 4 बजे** तक आयोजित की गई है। सभी पुरोहित-धर्माचार्य महानुभावों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर संगोष्ठी को सफल बनाने में अपना योगदान देवें। **सभी पुरोहित महानुभावों के लिए दोपहर के भोजन एवं सायंकालीन जलपान की व्यवस्था की गई है।**

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से अनुरोध करते हुए कहा है कि अपने पुरोहित महानुभावों को गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने के लिए प्रेरित करें तथा यदि आवश्यक हो तो आप इस दिन के लिए आर्यसमाज में कोई वैकल्पिक व्यवस्था भी कर लेवें, जिससे कि पुरोहित महानुभाव निश्चिन्तता से गोष्ठी में भाग ले सकें। *– कीर्ति शर्मा, संयोजक (9871277922)*

– शेष पृ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में केन्द्रीय आर्य समाज नेपाल के सहयोग से

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन काठमाण्डू (नेपाल) : 20-21-22 अक्टूबर 2016

सम्माननीय आर्य बन्धुओं!

सादर नमस्ते। आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 20, 21 तथा 22 अक्टूबर 2016 को नेपाल की राजधानी काठमांडू में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों के प्रतिनिधि भी नेपाल पहुंचेंगे। भारत वर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु भारी संख्या में आर्यजनों के पहुंचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही आर्य प्रतिनिधि सभा, नेपाल द्वारा प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था की जायेगी।

जैसाकि आप सभी जानते हैं कि नेपाल एक विकसित सम्पन्न देश नहीं है। पिछले भयानक भूकम्प ने वहां की स्थिति और भी खराब कर दी है। इसके बाद भी नेपाल की आर्य प्रतिनिधि सभा ने काठमांडू में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का जो उत्साह दिखलाया है वह आप सबके सहयोग से ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकेगा।

अनेकों आर्यजन इस अवसर पर नेपाल के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए नेपाल के रमणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। दोनों यात्राओं की जानकारी निम्न प्रकार है-

यात्रा नं. 1 (A)
(केवल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हेतु)

हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान (4 रात 5 दिन) 19 से 23 अक्टूबर 2016 तक
दिल्ली से 19.10.2016 को वापसी काठमांडू से 23.10.2016 को

यात्रा व्यय	रु. 35,000/- प्रति व्यक्ति	5 सितारा होटल के लिये
	रु. 27,000/- प्रति व्यक्ति	3 सितारा होटल के लिये
	रु. 22,000/- प्रति व्यक्ति	अतिथि भवनों के लिये

यात्रा व्यय की सम्पूर्ण राशि एक ही बार में **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बैंक ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर तत्काल भेजनी होगी:
श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

नोट : काठमांडू का भ्रमण कार्यक्रम 19 अथवा 23 अक्टूबर को रखा जायेगा।

– शेष जानकारी एवं आवेदन पत्र पृष्ठ 5 पर

सम्पादकीय

आखिर कश्मीर गुलाम किसका है?

क या कश्मीर गुलाम है, गुलाम है तो किसका है? यह प्रश्न मैदानी धरा से लेकर पहाड़ की चोटियों तक गूंज रहा है। किन्तु इसका सही उत्तर कोई नहीं बता रहा कि दरअसल कश्मीर तो आजाद है किन्तु कुछ लोगों की मानसिकता गुलाम है, या फिर यह कह लो कि कश्मीर मजहबी मानसिकता का गुलाम है, अलगाववादी नेताओं की जिद्द का गुलाम है, इस्लाम के निजाम की तकरीरों का गुलाम है, वरना तो मिलिए, सीखिए कुपवाड़ा के निवासी शाह फैसल से जो साल 2010 में आई.ए.एस. की परीक्षा में टॉपर बने थे या फिर पहले एम.बी.बी.एस. फिर IPS और अब IAS पास करने वाली लड़की रूवैदा सलाम से जिनका कश्मीरी दिल हिंदुस्तान के लिए धड़कता है। क्या कश्मीरी युवा बुरहान की बजाय इन नौजवानों से प्रेरणा नहीं ले सकते? लेकिन नहीं युवाओं के हाथ में जेहादी नेताओं द्वारा दीन का नारा थमा दिया, झूठी आजादी का सपना दिखा दिया कोई बताये तो सही कश्मीर में क्या नहीं है? लोकतंत्र है, समानता का अधिकार है, समाजवाद है, स्थानीय लोगों द्वारा चुनी हुई सरकार है। क्या नहीं है? यदि इन सबके बावजूद भी कश्मीर गुलाम है तो फिर मेरा मानना है कि कश्मीर पाकिस्तान की कलुषित मानसिकता का गुलाम है।

अब यदि कुछ लोगों के बहकावे में कश्मीरी सेना को हटाने की बात करें तो स्मरण रहे सेना वहां सीमाओं की रक्षा के लिए भी है। यदि भारतीय सेना न होती तो आज कश्मीर का अवाम पाकिस्तान या चीन के कब्जे में होता। भले ही उनके हाथ में इस्लाम का भूला-भटका निजाम होता किन्तु कश्मीरी के पास कश्मीर का कुछ न होता। गर्दन पर सिर तो होता किन्तु वह सिर पाक अधिकृत कश्मीर के अवाम की तरह पाकिस्तान या चीन की ठोकरों में होता है। लगता है कश्मीरी नौजवान आज मात्र कुछ पाक परस्त लोगों की सोच को कश्मीरी अपनी अस्मिता का प्रश्न बना बैठा है। क्या वह पंजाब से सीख नहीं ले सकता? वरिष्ठ इतिहासकार रामचन्द्र गुहा ने बहुत पहले लिखा था कि अस्सी के दशक में पंजाब से आने वाली खबरें भी इतनी मनहूसियत से भरी होती थीं कि ऐसा लगता था कि सरकार और लोगों के बीच की ये जंग कभी खत्म नहीं होगी या फिर सिखों के अलग देश खालिस्तान के बनने के बाद ही इसका अंत होगा। लेकिन आखिरकार ये हिंसा की आग मंद पड़ी और वक्त के साथ बुझ भी गई।

सत्तर और अस्सी के दशक में इसी मानसिकता का गुलाम पंजाब था। कुछेक सिखों द्वारा अलग देश खालिस्तान बनाने की मांग चरम पर थी जिसकी वजह से कई नौजवान आतंकवाद के रास्ते पर चल पड़े थे। कुछ सिख समुदाय इस कुंठा से भर आया था कि आजादी के बाद हिन्दू को हिंदुस्तान मिला। मुस्लिम को पाकिस्तान, पर हमें क्या मिला! पंजाब की सड़कें दिन दहाड़े हिंसा का सबब बनने लगी थीं। पंजाब की मिट्टी से सोंधी खुशबू की जगह बारूद की गंध आने लगी थी। कुछ ही वर्ष पहले 1971 में जब पाकिस्तान से बांग्लादेश अलग हो कर नया राष्ट्र बना था तो पाकिस्तानी सियासत का विचार था कि यदि पाकिस्तान से बांग्लादेश अलग हुआ है तो भारत से भी कुछ अलग होना जरूरी है। नतीजन साजिश रची गयी कि खालसा पंथ वालों को समर्थन दिया जाये और भारत से पंजाब को अलग कर एक राष्ट्र खालिस्तान खड़ा किया जाये जिसके लिए अलगाववादी नेता जरनैल सिंह भिंडरावाला को चुना गया। इसी विचार से बड़ी संख्या में धन जुटाया गया और पंजाब की सड़कों पर रक्तपात शुरू करा दिया। बिल्कुल ऐसे जैसे आज कश्मीर का हाल है। लेकिन तब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की सोच प्रबल थी कि जैसे भी हो आतंक का सफाया करना है। सरकार के कंधे ने सेना की बन्दूक का मजबूती से साथ दिया। नतीजा भिंडरावाला और उसके साथी मारे गये। पंजाबियों ने सांप्रदायिक मतभेदों को अलग करके अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने पर जोर दिया। जिसका परिणाम जल्द ही सामने आया। पंजाब एक समृद्ध राज्यों की श्रेणी में खड़ा हो गया।

आज कश्मीर की समस्या भी बिल्कुल ऐसी है, यानि कि धर्म के नाम पर अलग देश किन्तु कश्मीरी यह क्यों भूल जाते हैं कि खूनी संघर्ष हमेशा लहूलुहान सवालों की बरसात करता है। जैसे प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है बुरहान वानी एक आतंकवादी था, उसे बड़ा नेता न बनाया जाए उसे आतंकी के तौर पर ही देखा जाए। लेकिन अलगावादी नेता और पाकिस्तान के आतंकवादी से लेकर हुक्मरान तक बुरहान को शहीद बताकर नायक के रूप में पेश कर रहे हैं ताकि आतंक के नाम पर युवाओं को आतंक से जोड़ा जा सके। इससे साफ जाहिर है कश्मीर में भी हिंसा बिलकुल पंजाब की तरह पाक प्रायोजित है। अब इससे निपटने के लिए क्यों न पंजाब की तरह रास्ता निकाला जाये। इतिहास गवाह है महाभारत में विदुर ने कहा था बेशक कुछ चीखें सुनकर यदि शांति की स्थापना होती हो तो वे चींख सुन लीजिये। जब पंजाब के अलगाववादी नेता जरनैल सिंह व उसके साथियों को पंजाब की अशांति का दोषी मानकर सेना उन्हें मार गिरा सकती है तो कश्मीर की शांत फिजा में जहर घोलकर हर रोज घाटी को अशांत करने वाले नेताओं के साथ ऐसा व्यवहार क्यों नहीं? हर एक आतंकी के जनाजे का तमाशा अपने राजनितिक हित के लिए उठाने वाले नेता सेना की कार्यवाही पर धार्मिक पक्षपात् का आरोप लगाने वाली कुछ मीडिया कभी यह क्यों नहीं सोचती कि सेना के संस्कारों में धर्म के बजाय राष्ट्रधर्म होता है। कश्मीर का एक स्थानीय अखबार ग्रेटर कश्मीर ने अपने संपादकीय में लिखता है, 'ये आश्चर्य की बात है कि अगर इसी तरह के प्रदर्शन भारत के दूसरे हिस्सों में होते हैं तो उनसे पेशेवर तरीके से निपटा जाता है और किसी की मौत नहीं होती जैसी (कश्मीर) घाटी में होती है'' बिलकुल गलत और तथ्यहीन आरोप है कुछ माह पहले की मीडिया रिपोर्ट उठा लीजिये। मांग के बहाने जातिगत हिंसा को रोकने के लिए हरियाणा में भी हिंसक भीड़ को खदेड़ने के लिए सेना की कार्यवाही में 28 लोग मारे गये थे तो फिर कश्मीर में सेना की कार्यवाही पर बवाल क्यों? -**सम्पादक**

वेद-स्वाध्याय

परमात्मा का दर्शन क्यों नहीं होता?

न तं विदाथ य इमा जजान अन्यद् युष्माकं अन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।। -ऋ. 10/82/7
ऋषिः **विश्वकर्मा भौवनः।।** देवता- **विश्वकर्मा।।** छन्दः **पादनिचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ- हे मनुष्यो! **तं न विदाथ**= तुम उसे नहीं जानते **य इमा जजान**= जिसने कि इन सब (भुवनों) को बनाया है। **अन्यत्**=तुम अन्य प्रकार के हो गये हो और **युष्माकं अन्तरं बभूव**=तुम्हारा उससे बहुत अन्तर हो गया है। **नीहारेण**=अज्ञान के कोहरे से **प्रावृताः**=ढके हुए और **जल्प्या च**= अनृत और निरर्थक शब्दजाल से ढके हुए हम मनुष्य **असुतृपः**= प्राणतृप्ति में लगे हुए होकर या **उक्थशासः**=आडम्बरवाले बहुभाषी होकर **चरन्ति**=भटकते हैं।

विनय - हे मनुष्यो! तुम उसे नहीं जानते जिसने कि ये सब भुवन बनाये हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है! तुम्हारा वह पिता है, परन्त तुम अपने पिता से जुदा (अन्यत्) हो गये हो, तुम्हारा उससे बहुत अन्तर पड़ गया है। ओह! कितना भारी अन्तर हो गया है! मनुष्य का तो उसके प्रभु के साथ अन्तर नहीं होना चाहिए। वह प्रभु तो हम मनुष्यों की आत्मा की भी आत्मा है। उससे अधिक निकटतम वस्तु तो हमसे और कोई है ही नहीं, हो ही नहीं सकती। सचमुच वे परम-आत्मा हमारी आत्मा में भी व्यापक हैं। उनसे निकट हमारे और कोई नहीं है। फिर वे हमसे दूर क्यों हैं? इसका कारण यह है कि हमारे और उनके बीच में प्रकृति का पर्दा आ गया है। हम दो प्रकार के पर्दों से ढके हुए हैं जिससे कि वह इतना निकटस्थ भी हमसे इतना दूर हो गया है। एक प्रकार के (तमोगुण-बहुल) लोग तो 'नीहार'= अज्ञान से ढके हुए हैं जिसकी धुन्ध में इतने पास में भी उन्हें नहीं देख पाते; दूसरे (रजोगुण-बहुल) लोगों ने 'जल्पि' से, विद्या के शब्दाडम्बर से, पढ़ी-लिखी मूर्खता से निरर्थक जल्पना के पर्दे से अपने-आपको ढक लिया है। ये दोनों प्रकार के मनुष्य अपनी-अपनी दिशा में इतनी दूर बढ़ते गये हैं कि प्रभु से दिनों-दिन दूर होते गये हैं। नीहारावृत लोग तो संसार में ''असुतृप्'' होकर विचर रहे हैं। वे खाते-पीते मौज करते हुए निरन्तर अपने प्राणों के तर्पण करने में ही लगे हुए हैं। कामनाओं-इच्छाओं का निवास मनुष्य के सूक्ष्म प्राण में ही है। ये ज्यों-ज्यों अपनी बढ़ती जाती हुई अनगिनत कामनाओं को तृप्त कर अपनी इन कामनाओं को पुष्ट करते जाते हैं, त्यों-त्यों ये प्रभु से दूर होते जाते हैं। इसी तरह दूसरे जल्पावृत लोग ''उक्थशास्'' होते हैं, अर्थात् संसार में बड़े-बड़े शास्त्र पढ़कर, वादविवाद-वितण्डा में चतुर होकर, दूसरों को जोरदार व्याख्यान देते फिरते हैं, परन्तु अपने आपको नहीं पहचानते। ये जितने भारी वक्ता, लेखक और शास्त्रार्थकर्त्ता होते जाते हैं उतने ही ये बाह्य शब्दजाल में ऐसे उलझते जाते हैं कि अन्दर के देखने के अयोग्य होते जाते हैं, अतः अन्दर के आत्मस्थ प्रभु से दूर होते जाते हैं।

इसलिए आओ, हम लौटें। अपने अन्दर की ओर लौटें और अपने उस आत्मा के आत्मा को पा लेवें जिसके साथ हमें निरन्तर जुड़ा रहना चाहिए।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

बोध कथा

विनम्र बनो, कठोर नहीं

एक चीनी सन्त बहुत बूढ़े हो गए। देखा कि अन्तिम समय निकट आ गया है तो अपने सभी भक्तों और शिष्यों को अपने पास बुलाया। प्रत्येक से बोले-''तनिक मेरे मुंह के अन्दर तो देखो भाई! कितने दांत शेष हैं?''

प्रत्येक शिष्य ने मुंह के भीतर देखा। प्रत्येक ने कहा-'दांत तो कई वर्ष से समाप्त हो चुके हैं महाराज! एक भी दांत नहीं है।' सन्त ने कहा-'जिह्वा तो विद्यमान है?' सबने कहा-'जी हां!'

सन्त बोले-''यह बात कैसे हुई..? जिह्वा तो जन्म-समय भी विद्यमान थी। दांत उससे बहुत पीछे आये। पीछे आने वाले को पीछे जाना चाहिये था। ये दांत पहले कैसे चले गये?''

शिष्यों ने कहा- 'हम तो इसका कारण समझ नहीं पाते।'

तब सन्त ने धीमी आवाज में कहा- 'यही बतलाने के लिए मैंने तुम्हें बुलाया है। देखो! यह जिह्वा अब तक विद्यमान है तो इसलिए कि इसमें कठोरता नहीं और वे दांत पीछे आकर पहले समाप्त हो गए तो इसलिए कि वे बहुत कठोर थे। उन्हें अपनी कठोरता पर अभिमान था। यह कठोरता ही उनकी समाप्ति का कारण बनी। इसलिए मेरे बच्चो! यदि देर तक जीना चाहते हो तो नम्र बनो, कठोर न बनो!''

- *साभार : वैदिक विनय*

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

चलो फिर से लाशें गिनते हैं !

आज पूरी दुनिया में आतंकवादी के धर्म को लेकर एक बड़ी बहस मुखर है कि आतंक किस पंथ की देन है? विश्व समुदाय का एक बड़ा हिस्सा आतंक की जिम्मेदारी धार्मिक रूप से इस्लाम मत को मानने वालों के ऊपर पर डाल रहा है किंतु इस्लामिक मत को मानने वाले लोग इसकी जिम्मेदारी लेने को कतई तैयार नहीं हैं। यदि एक पल को मान भी लिया जाये कि चलो इन्होंने जिम्मेदारी ले भी ली तो क्या हो जायेगा? क्या हिंसा से भरी खोपड़ियाँ अपना हिंसक खेल खेलना बंद कर देंगी? हिंसक मनोवृत्ति के लोग तब भी हिंसा का खेल जारी रखेंगे। करीब आठ महीने बाद एक बार फिर फ्रांस के एक शहर नीस में 80 से ज्यादा लोगों की ट्रक द्वारा रौंदकर हत्या कर दी गयी जिसकी जिम्मेदारी इस्लामिक स्टेट के आतंकियों ने ली है। अपना देश सबको प्यारा होता है। मुझे भी है, फ्रांसिसियों को भी होगा लेकिन भारत में रहते हुए भी मैं सोच सकता हूं कि फ्रांस के लिए यह कितना दुखद दिन होगा। मृतकों के परिजनों की गीली पलकें दु:ख में फड़कते ओठ खुद से प्रश्न कर रहे होंगे कि आखिर हमने उन हत्यारों का क्या बिगाड़ा था? मैं यहां से सोच सकता हूं कि फ्रांस के लोग दुख के इस माहौल में भी समझदारी से काम लेंगे। तुर्की, बगदाद, काबुल, ढाका में हुए हमले के बाद एक बार फिर विश्व समुदाय के लिए यह घटना निंदा से भरी रहेगी। हो सकता है मोबाइल में ट्वीट पहले से सेव हो बस देश का नाम बदला हो! मीडिया को न्यूज मिल गयी, लेखकों को टॉपिक किन्तु मरने वाले को क्या मिला? अब एक बार फिर विश्व समुदाय आतंक से लड़ने के लिए एकजुट होने का ढोंग रचता दिखाई देगा। आतंक से साथ मिलकर लड़ने के बयान सुनाई देंगे। किन्तु सवाल यह है कि लड़ाई किससे होगी और कहाँ होगी? एक आतंकवादी संगठन का ढांचा गिरता है तो दूसरा खड़ा हो जाता है। आतंक के संगठनों के नाम बदलते रहते हैं। कृत्य समान ही रहते हैं। आखिर कब तक एक हत्यारी सोच से बारूद की लड़ाई होगी?

आतंक के मजहब को लेकर बहस बेकार और आधारहीन है, इसे साबित कर कुछ सिद्ध नहीं होगा सिवाय समय नष्ट करने के। आतंकवाद का कोई एक निश्चित ठिकाना नहीं है वह हर बार बेगुनाह, मासूम लोगों के बीच से निकलकर आता और मासूमों को मार देता है। इसे एक हिंसक सोच का उदार सोच पर प्रहार भी कह सकते हैं। अब समय आ गया है ऐसी हिंसक सोच के वे अड्डे तलाशने होंगे, जहाँ से ये निकलकर आता है और जहाँ ये फिर से छिप जाता है। आखिर क्यों बार-बार एक ही मत के लोग यह अमानवीय कृत्य करते हैं और उस मत के ठेकेदार कभी उसकी निंदा, आलोचना कर बस पल्ला झाड़ लेते हैं? एक जाकिर नायक को गिरफ्तार करने या सैन्य असैन्य कार्यवाही कर मुल्ला मंसूर या लादेन को मारने से क्या यह सोच मर जाएगी? यदि कोई हाँ कहे तो उसे अतीत के पन्नो में झांककर देख लेना होगा कि कहीं मत की आड़ में हिंसा का खेल पुराना तो नहीं। पुराना है तो क्यों है? मेरा मानना है अभी विश्व समुदाय के मन में आतंक के लिए उतनी नफरत नहीं पनपी जितना आतंकवादी के मन में मासूम लोगों की बेदर्दी से हत्या के लिए पनप रही है। क्योंकि अभी दस लाख के इनामी आतंकी बुरहान वानी के मामले में मैंने देखा कि भारत के अन्दर ही किस तरह एक आतंकी को अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर समर्थन मिल रहा है। वामपंथी नेता कविता कृष्णन ने बुरहान वानी के एन्काउंटर पर सवाल ही नहीं उठाए बल्कि बुरहान की मौत को देश के लिए शर्मनाक बताया। यहाँ से शुरू होता है एक खेल, आतंक के पैर जमाने के लिए। जहाँ आतंक के प्रति संवेदना हो, समर्थन हो, वहीं पर उसके लिए प्रेरणा भी छिपी होती है। वरना मान लीजिये किसी का दृष्टिकोण मानवीय है और वह किसी की भी हत्या को गलत मान रहा है तो उसकी नजरों में सैनिक और आतंकी में भेदभाव क्यों? शायद ही मैंने कविता कृष्णन का कभी कोई ऐसा विचार सुना हो जिसमें उन्होंने आतंकवादियों द्वारा किये गये किसी हमले को शर्मनाक बताया हो? या आतंकी हमले में शहीद हुए किसी जवान के प्रति शोक व्यक्त किया हो!

कई बार लगता कि एक तो आतंक को कहीं ना कहीं राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होता है और दूसरा मीडिया की भी अंतर्राष्ट्रीय आतंक में भूमिका संदिग्ध नज़र आती है जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। चाहे उसमें माध्यम इलेक्ट्रोनिक मीडिया हो या प्रिन्ट मीडिया। सोशल मीडिया की तो बात ही छोड़ दीजिए। यहाँ तो हर किसी का अपना स्टेंड है। स्वतंत्र मीडिया लोकतंत्र के लिए अनिवार्य है किन्तु जब पूरा विश्व आतंकवाद से त्रस्त हो उस समय किसी आतंकवादी को इस प्रकार नायक बनाना या अपनी प्रेरणा का उद्गम मान लेना अपने विनाश को न्यौता देना है। यह एक खतरनाक शुरुआत है माना कि आप सरकार के किसी कार्य से सहमत नहीं हैं या यह कहो इतना बड़ा देश है। इतनी विविधता है तो स्वाभाविक रूप से असहमतियां भी होंगी किन्तु क्या इसका हल क्या किसी को मकबूल भट्ट या बुरहान बना दे? सब जानते हैं जब पत्रकारिता बाजार में है तो बिकाऊ जरुर होगी। चाहे उसका रुझान सत्ता पक्ष हो या विपक्ष। आज पत्रकारिता आदर्शो में बंधी नहीं रही। जगह-जगह पत्रकारिता के नाम पर कभी अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर बुद्धिखोर लोगों का जमघट लगा रहता है। हर एक आतंकी घटना के पहले दिन मीडिया एक सुर बोलती दिखाई देगी। दो दिन बाद सबके मत विभाजित हो जाते हैं। कभी आतंकी की माँ को दिखाकर तो कभी उसके परिवार को दिखाकर न्यूज रूम के अन्दर मातमी धुन चलाई जाती है। कई बार तो सेना के शहीद जवानों पर 2 मिनट में खट्टी डकारें लेने वाले संवाददाता पूरा दिन आतंकी के परिवारों के गुजर बसर पर चिंतित दिखाई देते हैं यह किसी एक देश की कहानी नहीं है। हर दूसरे देश में यही हाल है कुछ दिन पहले एक अमेरिकी ब्लॉगर पामेला जेलर ने कहा था आज अमेरिकी जमीन खून से सनी है किन्तु यहाँ के वामपंथी उससे धूल ढकने की कोशिश कर रहे हैं। दिन पर दिन आतंकी सोच और समर्थन मजबूत होता जा रहा है। राष्ट्रों के प्रमुख बदल जाते हैं। वैश्विक मंचों पर आतंक पर प्रहार करने की कसमें खाई जाती हैं। नतीजा फिर एक आतंकी घटना फिर चीखते घायल, रोते बिलखते परिवारजन आज फ्रांस में हो गया। अगले दिनों हम अपने काम में लगे होंगे। सभी राष्ट्रों के प्रमुख अपनी सरकारें बचा रहे होंगे लेकिन प्रश्न यह है कि मासूम लोगों के खून से हर रोज अपने हाथ रंगने वाली इस सोच को खत्म कैसे किया जा सकता है। इसका दमन करके या इसका समर्थन करके?

-राजीव चौधरी

आप स्वयं विचार करें क्या आप स्वामी हैं अथवा सेवक हैं?

एक गांव में एक व्यक्ति रहता था जिसके पास एक घोड़ा था। उस व्यक्ति ने अपने घोड़े की सेवा करने के लिए एक सेवक रखा हुआ था। वह सेवक हर रोज प्रात: चार बजे उठता, घोड़े को पानी पिलाता, खेत से घास लेकर उसे खिलाता, चने भिगो कर खिलाता और उसका शौच हटाता, उसे लेकर जाने के लिए तैयार करता, उसके बालों को साफ करता, उसकी पीठ को सहलाता। यही कार्य सांयकाल में दोबारा से किया जाता। इसी दिनचर्या में पूरा दिन निकल जाता। अनेक वर्षो में सेवक ने कभी घोड़े के ऊपर चढ़कर उसकी सवारी करने का आनंद नहीं लिया। जबकि मालिक प्रात: उठकर तैयार होकर घर से बाहर निकलता तो उसके लिए घोड़ा तैयार मिलता है। वह घोड़े पर बैठकर, जोर से चाबुक मार मार कर घोड़े को भगाता था और अपने लक्ष्य स्थान पर जाकर ही रुकता था। चाबुक से घोड़े को कष्ट होता था और उसके शरीर पर निशान तक पड़ते मगर मालिक कभी ध्यान नहीं देता था। मालिक का उद्देश्य घोड़ा नहीं अपितु लक्ष्य तक पहुँचना था।

जानते हैं कि मालिक कौन है और सेवक कौन है और घोड़ा कौन है? यह मानव शरीर घोड़ा है। इस शरीर को सुबह से लेकर शाम तक सजाने वाला, नए नए तेल, उबटन, साबुन, शैम्पू, इत्र , नए नए ब्रांडेड कपड़े, जूते, महंगी घड़ियाँ और न जाने किस किस माध्यम से जो इसको सजाता है वह सेवक है अर्थात् इस शरीर को प्राथमिकता देने वाला मनुष्य सेवक के समान है। वह कभी इस शरीर का प्रयोग जीवन के लक्ष्य को सिद्ध करने के लिए नहीं करता अपितु उसे सजाने- संवारने में ही लगा रहता हैं जबकि वह जानता है कि एक दिन वृद्ध होकर उसे यह शरीर त्याग देना है। जो मनुष्य इन्द्रियों का दमन कर इस शरीर का दास नहीं बनता अपितु इसका सदुपयोग जीवन के उद्देश्य को, जीवन के लक्ष्य को सिद्ध करने में करता हैं वह इस शरीर का असली स्वामी हैं। चाहे इस कार्य के लिए शरीर को कितना भी कष्ट क्यों न देना पड़े, चाहे कितना महान तप क्यों न करना पड़े, यम-नियम रूपी यज्ञों को सिद्ध करते हुए समाधि अवस्था तक पहुँचने के लिए इस शरीर को साधन मात्र मानने वाला व्यक्ति ही इस शरीर का असली स्वामी हैं।

ऋग्वेद 9/73/6 में ईश्वर को "पवमान" अर्थात पवित्र करने वाला बताया गया है। पवमान ईश्वर अपने स्वर्गिक ज्ञान के स्वरों और दिव्य प्रकाश की किरणों से सत्य नियम रूपी स्वर और प्रकाश रूपी ज्ञान का नाद कर रहा हैं। प्रभु की वीणा से निकले स्वर और रश्मियों रूपी किरण से यह सब जगत विलुप्त हो रहा हैं। जो इन्द्रियों के भोग में अंधे और बहरे हो जाते हैं वह न ईश्वर के इस पवित्र करने वाले नाद को सुन पाते हैं, न उसके दिव्य प्रकाश के दर्शन कर पाते हैं।

आईये हम सब अपने कान और आँख खोल लें जो ईश्वर ने हमें दिए हैं और प्रभुधाम से आने वाले अनवरत दिव्य स्वर और प्रकाश को ग्रहण करे। जो व्यक्ति इस शरीर का स्वामी है, वही ईश्वर के पवमान स्वर को सुन सकता हैं। शरीर का सेवक तो सदा अँधा और बहरा ही बना रहेगा। आप स्वयं विचार करे क्या आप स्वामी हैं अथवा सेवक हैं?

- डॉ. विवेक आर्य

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा मध्य दिल्ली एवं पश्चिमी दिल्ली आर्य विद्यालयों की कार्यशालाएं सम्पन्न

मनुष्य बनने के लिए आकर्षक व्यक्तित्व व सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए – सुरेन्द्र रैली

30 जून 2016 (वीरवार) को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सै. स्कूल राजा बाजार के सभागार में मध्य दिल्ली के विद्यालयों की कार्यशाला सम्पन्न हुई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा, मैनेजर श्री संजय कुमार, प्रिं. श्रीमती किरण तलवार, श्री रविन्द्र कुमार वर्मा, श्रीमती उषा रिहानी श्रीमती वेनु शर्मा, श्रीमती वीना आर्या एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा उपस्थित थे। इस विद्यालय में रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल की अध्यापिकाएं, रघुमल आर्य कन्या विद्यालय-डा. लेन, जुगमिन्दर दास स्कूल-खारी बावली, दयानन्द माडल स्कूल-तिलक नगर की अध्यापिकाएं भी उपस्थित थीं।

2 जुलाई 2016 (शनिवार) को दयानंद मॉडल स्कूल-न्यू मोती नगर में उत्तरी दिल्ली के शिक्षक/शिक्षिकाओं ने भाग लिया।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधान श्री मदन मोहन सलूजा, मैनेजर श्री सुरेश टंडन, प्रि. श्रीमती इन्दिरा छाबड़ा, श्रीमती सुरुचि टंडन, श्रीमती मनोचा जी, श्रीमती तृप्ता शर्मा, वीना आर्या उपस्थित थे।

महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल न्यू मोती नगर, एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, जुगमिंदर दास स्कूल खारी बावली, दयानंद मॉडल स्कूल, तिलक नगर की अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र रैली जी ने गायत्री मंत्र (अर्थ सहित) के साथ कार्यशाला का प्रारम्भ करते हुए ईश्वर के निज नाम ओ३म् की व्याख्या की और आर्य समाज के विद्यालयों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा कि सुनना भी एक कला है जिसने सुन लिया उसने पा लिया।

अथर्ववेद में कहा है- 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनो। क्या हम मनुष्य हैं। कहा है- इंसान बनने में जब दिक्कतें पेश आई तो कोई हिन्दू बन गया, कोई ईसाई बन गया। मनुष्य कैसे बना जाए? इसके लिए आकर्षक व्यक्तित्व (Pleasing personality) होनी चाहिए। सकारात्मक दृष्टिकोण (Positive attitude) होना बहुत जरूरी है।

सकारात्मक दृष्टिकोण के नियम बताए और कहा कि एक अच्छी अध्यापिका को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। मेहनत व लगन के साथ पढ़ाना चाहिए। समय का पालन बहुत आवश्यक है। समय बड़ा बलवान होता है।

डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने कहा- आज कार्यशाला के अन्तिम सत्र में सबके लिए हार्दिक मंगलकामना करता हूँ सब स्वस्थ रहें सुखी रहें सबकी परिस्थितियाँ अनुकूल हों। जो कुछ सुना उस पर चिन्तन करें, विचार करें। जैसे गाय भैंस चारा खाने के बाद एकांत में बैठकर जुगाली करती है वैसे ही आप ने भी जो कुछ सुना, उस पर विचार करें। भोजन वही जो शरीर को लग जाए। विचार वही जो जीवन से जुड़ जाए, जीवन का अंग बन जाए। यह हमारा सौभाग्य है कि परमात्मा ने हमें मानव बनाया और मानव बनाकर शिक्षा का क्षेत्र दिया, ज्ञान का क्षेत्र दिया। सबसे बड़ा दान-ज्ञान का दान है। तीसरा नेत्र ज्ञान का नेत्र कहा गया है। शिक्षक मानव निर्माण का, समाज निर्माण का, राष्ट्र जीवन निर्माण का कार्य करता है। फिर भी मानवता का, इंसानियत का, ह्रास हो रहा है जीने की कला आनी चाहिए। जीने की कला आती हो तो मानव नरक को स्वर्ग में, दुख को सुख में, अशान्ति को शान्ति में, रोग को निरोग में बदल देता है। जैसे भयंकर गर्मी को A.C. ने Technic द्वारा ठंडक में बदल दिया। वैसे ही जीवन जीना भी एक कला है, Technic है। मानव नर से नारायण, व डाकू से संत बन जाता है। आर्य समाज ने मानव को ज्ञान व चिंतन दिया। आप ने जो सुना उस पर चिंतन करें विचार करें। 'मनुर्भव' मनुष्य बनें।

अंत में विद्यालय के प्रधान श्री मदन मोहन सलूजा जी ने सबका हार्दिक धन्यवाद किया।

स्मृति दिवस
27 जुलाई पर विशेष

महात्मा आनन्दमुनि जी वानप्रस्थ का पुण्य स्मरण

ऋषि दयानन्द सरस्वती के अनन्यभक्त तथा उन्हीं के मार्ग के पथिक, समाज के प्रेरणा-स्रोत, सौम्य स्वभावी एवं वैदिक सिद्धान्तों के निर्भीक प्रचारक महात्मा आनन्दमुनि वानप्रस्थ भी अल्प समय के लिए ही आर्य जगत के क्षितिज पर प्रकाशमान हुए, वानप्रस्थ काल में इन्होंने दिल्ली देहात, नवविकसित कालोनियों, केन्द्रीय सचिवालय के निकट बोटक्लब, दिल्ली विश्वविद्यालय, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में घूम-घूमकर लोगों को सनातन वैदिक मान्यताओं एवं संस्कृति का अनुपालन करते रहने की प्रेरणा दी। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती से वानप्रस्थ दीक्षा लेने से पूर्व इन्हें चौधरी भीमसिंह नाम से जाना जाता रहा।

महात्मा आनन्दमुनि वानप्रस्थ आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के प्रबल समर्थक, निर्भीक प्रचारक एवं समाज के लिए प्रेरणास्रोत रहे हैं।

ऋषि दयानन्द सरस्वती के अनन्यभक्त तथा उन्हीं के मार्ग के पथिक, समाज के प्रेरणा-स्रोत, सौम्य स्वभावी एवं वैदिक सिद्धान्तों के निर्भीक प्रचारक महात्मा आनन्दमुनि वानप्रस्थ भी अल्प समय के लिए ही आर्य जगत के क्षितिज पर प्रकाशमान हुए, वानप्रस्थ काल में इन्होंने दिल्ली देहात, नवविकसित कालोनियों, केन्द्रीय सचिवालय के निकट बोटक्लब, दिल्ली विश्वविद्यालय, हरियाणा और उत्तरप्रदेश के अनेक क्षेत्रों में घूम-घूमकर लोगों को सनातन वैदिक मान्यताओं एवं संस्कृति का अनुपालन करते रहने की प्रेरणा दी। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती से वानप्रस्थ दीक्षा लेने से पूर्व इन्हें चौधरी भीमसिंह नाम से जाना जाता रहा, इनका जन्म हरियाणा (तत्कालीन पंजाब) प्रान्त के रोहतक जिले के किसरेटी गांव में एक सामान्य किसान परिवार में 11 जून 1923 को हुआ, इनके पिता चौधरी श्रीचन्द एवं चाचा चौधरी सुखदेव आर्य समाज के विभिन्न आन्दोलनों में आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) के आह्वान पर सक्रिय सदस्य के रूप में भाग लेते रहे तथा अन्य आन्दोलनकारियों के साथ कारावास भी भोगा। पितामह एवं पिताजी की प्रेरणा से ही इन्हें प्रारम्भिक शिक्षण हेतु स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुल मटिन्डू में प्रवेश दिलाया गया। अत: यह अतिश्योक्ति न होगी कि यह आर्य समाज की पहली पीढ़ी के परिवार में पल- बढ़कर ही वैदिक धर्म के पथिक बने। जैसे कि इनके प्रान्त की परम्परा रही कि अधिकांश युवाओं का सेना में भर्ती होना गौरव का विषय माना जाता था। अत: वर्ष 1942 से 1947 तक तत्कालीन अंग्रेजी शासन की सेना में नौकरी की परन्तु इसी बीच बर्मा (वर्तमान म्यांमार) में नेताजी सुभाष चन्द बोस के स्वराष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य से सम्बन्धित प्रेरणादायी तथा क्रांतिकारी विचार सुनने के पश्चात् सेना को सूचित किए बिना इस नौकरी का परित्याग कर दिल्ली को अपना कार्यक्षेत्र चुना, जीवन-यापन और गृहस्थ की जिम्मेदारी निभाने हेतु इन्होंने

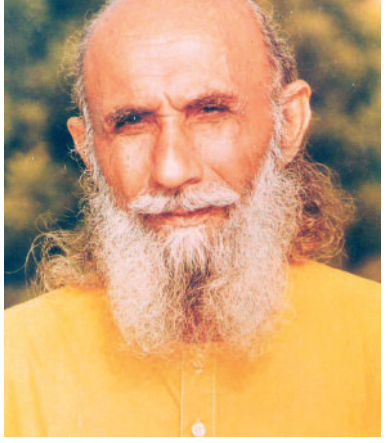

पहले कर्नल राघवेन्द्र सिंह की भू-सम्पदा कम्पनी डी. एल. एफ. तथा बाद में वर्ष 1954 से 1982 तक भारत सरकार के वाणिज्य मन्त्रालय के अन्तर्गत चाय बोर्ड में नौकरी की। शासकीय सेवा से निवृत हो जाने के कुछ वर्षों तक वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कर लेने के पश्चात् 6 मई 1984के दिन स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती से वानप्रस्थ दीक्षा ग्रहण कर वैदिक-धर्म और समाज-सेवा के कार्यों

- शेष पृष्ठ 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

यात्रा नं. 1 (B)

वाराणसी तथा गोरखपुर से वातानुकूलित 2×2 बसों द्वारा प्रस्थान (5 रात 6 दिन)
19 से 24 अक्टूबर 2016 काठमांडू से वापसी 23 की रात को
यात्रा व्यय रु. 7500/- प्रति यात्री

इस राशि में 6 दिन का वातानुकूलित बस का भाड़ा, 4 दिन का होटल का किराया, 4 दिन की भोजन व्यवस्था तथा काठमांडू घूमने का बस खर्चा शामिल है। इस यात्रा के लिये रु. 7500/- का बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर यात्रा नं. 1 (A) में पृष्ठ 1 पर दिये गए पते पर तत्काल भेजना होगा।

वाराणसी तथा गोरखपुर से जाने वाली बसों के सम्बन्ध में विशेष सूचना

(1) जो लोग वाराणसी तथा गोरखपुर तक ट्रेन से पहुंचकर वहां से नेपाल जाने की सुविधा चाहते हैं उन यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बड़ी कोशिशों के बाद गोरखपुर तथा वाराणसी से ए.सी. बसों की व्यवस्था हो सकी है जिससे कि यात्री नेपाल तक की यात्रा के अनेक कष्टों और असुविआधों से बच सकें।
(2) सभी बसें वाराणसी तथा गोरखपुर रेलवे स्टेशनों से प्रस्थान करेंगी। प्रत्येक बस में केवल 40 यात्री ही जा सकेंगे।
(3) जितने यात्री 18 अक्टूबर की रात को 9.00 बजे तक वाराणसी तथा गोरखपुर पहुंच जायेंगे उन्हें 18 की रात को 11.00 बजे 40-40 के ग्रुप में काठमांडू के लिये रवाना कर दिया जायेगा। उसके बाद जितने भी यात्री पहुंचेंगे उन्हें 19 अक्टूबर की सुबह 8.00 बजे 40-40 के ग्रुप में भेजा जायेगा।
(4) काठमांडू पहुंचने में वाराणसी से लगभग 18 घन्टे का तथा गोरखपुर से लगभग 14 घन्टे का समय लगता है। नेपाल बॉर्डर रात को 10 बजे से सुबह 5.30 बजे तक बन्द रहता है इसलिए बसों को बॉर्डर पर रात को 10 बजे से पहले या सुबह 5:30 बजे के बाद पहुंचना ठीक रहता है ताकि वहां समय व्यर्थ बरबाद न हो।
(5) गोरखुपर से काठमांडू तक के रास्ते में तथा लौटते समय नाश्ते तथा भोजन का खर्चा यात्री को स्वयं करना होगा।
(6) काठमांडू में 20, 21, 22 तथा 23 अक्टूबर को चार दिन की भोजन व्यवस्था एवं 19 से 22 अक्टूबर तक की होटल व्यवस्था तथा भ्रमण-व्यवस्था सभा की ओर से की जायेगी। 23 अक्टूबर को काठमांडू भ्रमण के पश्चात् बस भारत के लिये रवाना होगी।
(7) नेपाल जाते समय यात्री के पास पासपोर्ट अथवा वोटर कार्ड होना जरूरी है।
नोट : उक्त पैकेज ता. 18 अक्टूबर की सुबह से 19 अक्टूबर की सुबह तक पहुंचने वाले यात्रियों के लिये ही उपलब्ध रहेगा। जिन्हें 40 के ग्रुप में बुकिंग करानी हो वे ग्रुप बुकिंग करवा सकते हैं।

यात्रा नं. 2 (A) : नेपाल सम्मेलन तथा पोखरा यात्रा

हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान (7 रात 8 दिन)

दिल्ली से 17.10.16 को	वापसी काठमांडू से 24.10.16 को
दिल्ली से 18.10.16 को	वापसी काठमांडू से 25.10.16 को
दिल्ली से 19.10.16 को	वापसी काठमांडू से 26.10.16 को

एक ही दिन में ज्यादा हवाई टिकटें उपलब्ध न होने के कारण तीन अलग-अलग तारीखों में थोड़ी-थोड़ी टिकटें खरीदी जा सकी हैं। सम्मेलन से पहले या बाद में ए.सी. बसों द्वारा पोखरा की यात्रा की जायेगी। पोखरा प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर बहुत ही रमणीय स्थान है। यहां पर दो रात्रि का विश्राम रखा गया है। बीच रास्ते में अन्य दर्शनीय स्थलों को भी देखने का अवसर मिलेगा। यात्रा नं. 2 के अन्तर्गत काठमांडू में एक दिन का अतिरिक्त विश्राम भी शामिल है जिससे कि सम्पूर्ण यात्रा आरामदायक रहे।

यात्रा व्यय रु. 46,500/- प्रति व्यक्ति 5 सितारा होटल के लिये
रु. 36,500/- प्रति व्यक्ति 3 सितारा होटल के लिये

यात्रा नं 2 (A) के लिये सम्पूर्ण राशि का बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर यात्रा नं. 1 (A) में पृष्ठ 1 पर दिये गए पते पर तत्काल भेजना होगा।

यात्रा नं. 2 (B) : नेपाल सम्मेलन तथा पोखरा यात्रा

गोरखपुर तथा वाराणसी से वातानुकूलित 2×2 बसों द्वारा प्रस्थान (7 रात 8 दिन)
19 से 26 अक्टूबर 2016 तक पोखरा से वापसी 25 की रात को
यात्रा व्यय रु.11,500/- प्रति यात्री

इस राशि में 8 दिन का वातानुकूलित बस का भाड़ा, 6 दिन का होटल का किराया, 6 दिन की भोजन व्यवस्था तथा काठमांडू और पोखरा घूमने का बस खर्चा शामिल है। इस बस यात्रा के लिये रु. 11,500/- का बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर यात्रा नं. 1 (A) में पृष्ठ 1 पर दिये गए पते पर तत्काल भेजना होगा।

वाराणसी तथा गोरखपुर से जाने वाली बसों के सम्बन्ध में विशेष सूचना

यात्रा नं. 1 (B) में दी गई बस यात्रा वाली सूचनाएं क्रमांक 1 से 5 तथा 7 इस यात्रा में भी लागू होंगी। नेपाल में 20, 21, 22, 23, 24 तथा 25 अक्टूबर को 6 दिन की भोजन व्यवस्था एवं 19 से 24 तक 6 दिन की होटल की व्यवस्था तथा सारी भ्रमण व्यवस्था सभा की ओर से की जायेगी। काठमांडू तथा पोखरा घूमने के पश्चात् 25 अक्टूबर को बस भारत के लिये वापस रवाना होगी।

यात्रा नं. 3

(काठमांडू तक अपने आप पहुंचने वालों के लिये विशेष सुविधा)

अपने आप काठमांडू पहुंचने वालों के लिये काठमांडू में 4 दिन साधारण होटल में ठहरने की तथा 4 दिन की भोजन व्यवस्था सभा द्वारा की जा रही है। जो भी यात्री इस सुविधा को लेना चाहें वे तत्काल 4,000/- का बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर यात्रा नं. 1 (A) में पृष्ठ 1 पर दिये गए पते पर तत्काल भेजने का कष्ट करें। **नोट :** इस पैकेज में अन्य कोई सुविधा नहीं दी जा सकेगी।

कुछ आवश्यक सूचनाएं

(1) **ग्रुप बुकिंग के कारण हवाई जहाज की टिकटें बहुत ही कम संख्या में उपलब्ध हो सकी हैं अत: आप शीघ्रातिशीघ्र अपनी बुकिंग करा लें जिससे कि आपको निराश न होना पड़े।**
(2) नेपाल यात्रा में बीमा की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु यदि आप जरूरी समझें तो स्वयं करवा लें। दिये हुए पैकेज में बीमा शामिल नहीं है।
(3) **जो लोग बिना किसी पूर्व सूचना के सीधे पहुंचेंगे उनके ठहरने व खाने की जिम्मेदारी सभा की नहीं होगी। नेपाल सम्मेलन में भाग लेने के लिये उन्हें रु. 1500/- की सहयोग राशि नेपाल में सार्वदेशिक सभा को देनी अनिवार्य होगी। सम्मेलन में तीनों दिन भोजन व्यवस्था उपलब्ध रहेगी।**
(4) सभी यात्रियों को यात्रा की व्यय राशि के ड्राफ्ट के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ अथवा वोटर कार्ड अथवा आधार कार्ड की जेरोक्स कापी अवश्य भेजनी है। एअर लाइन की टिकिट के लिये इसकी आवश्यकता रहती है।
(5) संलग्न आवेदन पत्र पर सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है।
(6) नेपाल के लिये वीजा नहीं चाहिये किन्तु एअरपोर्ट पर पासपोर्ट अथवा वोटर कार्ड अथवा आधार कार्ड में से किसी एक का लाना अत्यावश्यक है।
(7) सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 5 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य श्री प्रकाश जी आर्य, मंत्री, सार्वदेशिक सभा, श्री अरुण प्रकाश जी वर्मा, दिल्ली, श्री एस.पी. सिंह जी, दिल्ली तथा श्री शिव कुमार जी मदान, दिल्ली हैं।

यात्रा कैन्सिल कराये जाने पर कैन्सीलेशन चार्जेज निम्न प्रकार लागू होंगे:

1. प्रस्थान की तारीख से 30 दिन पूर्व हवाई यात्रा कैन्सिल कराने पर रु. 7500/- की कटौती की जायेगी। 2. प्रस्थान की तारीख से 16 दिन पूर्व हवाई यात्रा कैन्सिल कराने पर 75% की कटौती की जायेगी। 3. प्रस्थान की तारीख से 1 दिन से लेकर 15 दिन पहले तक यात्रा कैन्सिल कराने पर 100% कटौती की जायेगी।

कृपया उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं:

1. श्री अरुण प्रकाश वर्मा (9810086759) 2. श्री एस.पी.सिंह (9540040324)
3. श्री शिव कुमार मदान (9310474979)

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

नेपाल यात्रा में बच्चों की व्यवस्था सम्बन्धी सूचना अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

(प्रकाश आर्य)
मन्त्री, सार्वदेशिक आ. प्र. सभा
मो. 9826655117

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2016 हेतु आवेदन - पत्र

श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
मो. 9824072509

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2016 में भाग लेने जाना चाहता हूं/चाहती हूं। इस सम्बन्ध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है:

नाम :.....पिता/पति का नाम :.....
आयु : ..... जन्म तिथि : .....
व्यवसाय : .....स्थाई पता : .....
.....
..... पिन कोड :.....
दूरभाष .....मोबाईल : .....
ई.मेल :.....
मैं आर्य समाज .....का/की सदस्य हूं।

यात्रा नं. 1 (A) तथा यात्रा नं. 1 (B)

मैं यात्रा नं. 1 (**A**)/नं. (**B**) में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि रु...../- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। साथ में पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ/वोटर कार्ड/आधार कार्ड की जैरोक्स भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. 2 (A) तथा यात्रा नं. 2 (B)

मैं यात्रा नं 2 **(A)**/ नं. 2 **(B)** में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि रु. ...../-का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। साथ में पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ/वोटर कार्ड/आधार कार्ड की जैरोक्स भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. 3

मुझे यात्रा नं. 3 वाली सुविधा चाहिए। मैं रु. 4000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्य समाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ) **भवदीय/भवदीया**
दिनांक : ..... **(आवेदक के हस्ताक्षर)**

आवेदन पत्र हमारी बैवसाइट ww.thearyasamaj.org से भी डाउनलोड किए जा सकते हैं। शीघ्र आवेदन करें। स्थान सीमित हैं।

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Bless me with the Glamour

I will be glamorous. Glamour is the combination of beauty and form. It is that splendour which is pure, innocent and sinless. I will be glamorous to save life from all sin and crime. I willl collect glamour from all goodness of creation. The verse says, "The glory and glamour of gold-like creation as well as the glory of time, and the eternal truth of Divine Supreme may all of us be blessed with them." After colleting all brightness and becoming splendorous, we will distribute the same ammongst the masses.

The Vedic devotee is not a beggar in ordinary sense. After discharging his duty diligently,he surrenders to God. Whatever he derives from prayer, he distributes among others. He knows well that his bag of distribution will always remain full. He is never without wealth. He derives "hiranya", the Virya which is the essence of life. In spite of all possessions, he is poor if that life-liquid is not within him. So he prays, "Journeying on the path of self-illumination, I will not be a victim to the passion of the body."

यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा सं सृजामसि।। *(Sv.624)*

Yad varco hiranyasya yad va varco gavamuta.
satyasya brahmano varcas tena ma samsrjam asi..

Praya to God before Death comes

The verse says, "O man, accept God as your saviour before the thunderbolt of death falls on your head. Offer your reverential gratitude to Him. Experience Him as your saviour so that you become fearless. He is the destroyer of death. May death appear as the door opening to a new life."

Out of ignorance some people do not attach importance to the life-sustaining air, water, sunshine and many other substances which God has ordained as gift absolutely free. They do not realize the simple fact that one has to pray for cutting one's hair but nothing is required to be paid for the hair to grow on the head. One has to pay to the doctor for extracting the tooth, but tooth is grown without payment in one's mouth. Unfortunately man pays attention to that work where he has to pay money. But God provides everything for us defore we ask Him. We go to sleep after finishing our meal and God stays awake and converts the food into blood and flesh. We will be ungrateful if we forget His blessings and gifts. Let us accept the kind Lord as our saviour before death strikes us unawares as lightning.

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।
अग्निं पुरा तनयित्रोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्।। (Sv.69)

A vo rajanam adhvarsya rudram hotaram satyayajam rodasyoh.
agnim pura tanayitrora citta adhiranyarupam avase krudhvam..

Joy out of Sadhana

"The mortal who, seated in the fire of austerity, presents his gratifying homage to the resplendent God, on him God showers His blessings for his sustenance".

The efforts resting on truth never fail. The more purposeful is the effort, the more joyful becomes the result. Every moment of Sadhana becomes helpful in achieving the goal of life. Sadhana is the saviour. It is the real beauty that never fades by success or failure, profit or loss, honour or dishonour considering those as irrelevant. As is the thought, so is the Sadhana. The aim of Sadhana is meeting the source of supreme joy of self is never experienced in the pleasure of physical senses. The body gets mere pleasure when you feel it, give rest to it or decorate it, but it is not real joy. The true joy arises from Atma Sadhana, austerity of Soul.

O man! introspect your ownself by concentrating your mind, Think that you are not the body, but the possessor of body; you are not the house but the house-owner. Calm your restless mind through practice and renunciation. The Universal mother appears before him who like a child eagerly seeks for her. Spurn all forms of ego and self-conceit and that prepares you for joy.

य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः।
द्युम्नाय सुतरा अपः।। (Sv.1150)

Ya iddha avivasati sumnamindrasya martyah.
Dyumnaya sutara apah.

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ -8

गतांक से आगे....

आओ आज संस्कृत में समय देखना सीखते हैं

कः समयः = क्या समय हुआ है ? क्या बजा है ?

(इस प्रकार समय पूछा जा सकता है जिसके उत्तर में हम इस प्रकार समय बोलेंगे)

एक वादनम्, द्वि वादनम्, त्रि वादनम्, चतुर वादनम्, पञ्च वादनम्, षड़ वादनम्, सप्त वादनम्, अष्ट वादनम्, नव वादनम्, दश वादनम्, एकादश वादनम्, द्वादश वादनम्,

प्रश्न :- अधुना कः समयः = अभी क्या बजा है ?

उत्तर :- द्वि वादनम् = दो बजे हैं।

यदि इसी समय को सवा दो , सवा तीन कहना हो तो ऊपर बताए गए समय के आगे ''सपाद'' बोलेंगे।

प्रश्न :- अधुना कः समयः = अभी क्या बजा है ?

उत्तर :- सपाद त्रि वादनम् = सवा तीन बजे हैं।

यदि इसी समय को साढ़े तीन, साढ़े चार कहना हो तो ऊपर बताए गए समय के आगे ''सार्ध'' बोलेंगे।

प्रश्न :- अधुना कः समयः = अभी क्या बजा है ?

उत्तरः - सार्ध चतुर वादनम् = साढ़े चार बजे हैं।

यदि इसी समय को पौने तीन, पौने चार कहना हो तो ऊपर बताए गए समय के आगे ''पादोन'' बोलेंगे।

प्रश्न :- अधुना कः समयः = अभी क्या बजा है ?

उत्तर :- पादोन पञ्च वादनम् = पौने पाँच बजे हैं।

आप समय का अभ्यास स्वयं कर सकते हैं। समय बोलना बहुत ही सरल है। मैं कितने बजे क्या करता हूँ यह बोलने के लिए समय की संख्या को ''सप्तमी विभक्ति'' में बोलेंगे जैसे -

अहं चतुर वादने संस्कृतं पाठयितुम् गमिष्यामि।
अद्य सायं सप्त वादने पुस्तकालयं गमिष्यामि। आदि।

नित्य संस्कृत बोलने का अभ्यास करें, आपस में बोलते रहें बहुत ही शीघ्र आप संस्कृत में बातचीत करने लग जाएंगे।

समय के बारे में जानने के पश्चात् 'न' कारात्मक शब्दों का अभ्यास करते हैं -

अहं असत्यम् न वदामि। अहम् आलस्यम् न करोमि, भवान् आलस्यम् न करोतु

अहं गणितं न पठामि = मैं गणित नहीं पढ़ता हूँ।

अहं बदरीफलं न खादामि = मैं बेर नहीं खाता हूँ।

अहं शीतलं जलं न पिबामि = मैं ठंडा पानी नहीं पीता हूँ।

अहं शीतलेन जलेन स्नानं करोमि = मैं ठंडे पानी से स्नान करता हूँ।

अहं उष्णेन जलेन स्नानं न करोमि = मैं गरम पानी से स्नान नहीं करता हूँ।

अहं प्रयोगशालां न गच्छामि =मैं प्रयोगशाला नहीं जा रहा हूँ।

अहम असत्यम न वदामि = मैं झूठ नहीं बोलता हूँ।

अहम अशुद्धम न लिखामि = मैं अशुद्ध नहीं लिखता हूँ।

अहं सूर्यं प्रति न पश्यामि = मैं सूर्य की तरफ नहीं देखता हूँ।

अहं विवादं कर्तुम् न शक्नोमि = मैं विवाद नहीं करता हूँ।

अहं उत्कोचं न स्वीकरोमि = मैं रिश्वत नहीं लेता हूँ ।

अहम अधिकं भारं न नयामि = मैं अधिक भार नहीं ले जाता हूँ।

कृपया इन सभी वाक्यों की तरह से आप भी अन्य वाक्य बनाएँ। कृपया संस्कृत वाक्यों का अभ्यास करते रहें, रुकें नहीं, आप अवश्य ही संस्कृत में बातचीत करना सीख जाएंगे। आइये अब संस्कृत सर्वनाम के विषय में जानते हैं: -

सर्वनामपरिचयः

प्रथमपुरुषः =

सः - वह, तौ - वह दो, ते - वह सब = पुल्लिंगम्

सा - वह, ते - वह दो, ताः - वह सब = स्त्रीलिंगम्

मध्यमपुरुषः

त्वं - तुम, युवां - तुम दोनों, यूयं - तुम सब।

उत्तमपुरुषः

अहं - मैं , आवां - हम दोनों , वयं - हम सब

उदाहरणाणि=

सः बालकः अस्ति ।	वह बालक है।
सः पाठं पठति।	वह पाठ पढ़ रहा है।
सः कार्यं करोति।	वह कार्य कर रहा है।
सः विद्यालयं गच्छति।	वह विद्यालय जा रहा है।

वाक्याभ्यासः (पुल्लिङ्ग) (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचने	**एकवचने**
सः बालकः अस्ति।	सा बालिका अस्ति।
सः पाठं पठति।	सा पाठं पठति।
सः कार्यं करोति।	सा कार्यं करोति।
सः विद्यालयं गच्छति।	सा विद्यालयं गच्छति।
द्विवचने	**द्विवचने**
तौ बालकौ स्तः।	ते बालिका स्तः।
तौ पाठं पठतः।	ते पाठं पठतः।
तौ कार्यं कुरुतः।	ते कार्यं कुरुतः।
तौ विद्यालयं गच्छतः।	ते विद्यालयं गच्छतः।
बहुवचने	**बहुवचने**
ते बालकाः सन्ति।	ताः बालिका सन्ति।
ते पाठं पठन्ति।	ताः पाठं पठन्ति।
ते कार्यं कुर्वन्ति।	ताः कार्यं कुर्वन्ति।
ते विद्यालयं गच्छन्ति।	ताः विद्यालयं गच्छन्ति।
(मध्यम पुरुष)	**(उत्तम पुरुष)**
एकवचने	**एकवचने**
त्वं कुत्र असि।	अहम् अध्यापकः अस्मि।
त्वं पाठं पठसि।	अहं पाठं पठामि।
त्वं कार्यं करोषि।	अहं कार्यं करोमि।
त्वं विद्यालयं गच्छसि।	अहं विद्यालयं गच्छामि ।
द्विवचने	**द्विवचने**
युवां कुत्र स्थः।	आवाम् अध्यापकौ स्वः।
युवां पाठं पठथः।	आवां पाठं पठावः।
युवां कार्यं कुरुथः।	आवां कार्यं कुर्वः।
युवां विद्यालयं गच्छथः।	आवां विद्यालयं गच्छावः।
बहुवचने	**बहुवचने**
यूयं कुत्र स्थ।	वयम् अध्यापकाः स्मः।
यूयं पाठं पठथ।	वयं पाठं पठामः।
यूयं कार्यं कुरूथ।	वयं कार्यं कुर्मः।
यूयं विद्यालयं गच्छथ।	वयं विद्यालयं गच्छामः।

क्रमशः

- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

महिला वेद प्रचार समिति द्वारा सात कुण्डीय यज्ञ एवं सम्मान

आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली की महिला वेद प्रचार समिति द्वारा दिनांक 10 जुलाई 2016 को पूर्व प्रधान श्रीमती विद्यावती आर्या के नेतृत्व में सात कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया तथा नगर वन पार्क सागरपुर में जिन महिलाओं के सहयोग से प्रति वर्ष वेद कथा का आयोजन किया जाता है उन सभी महिलाओं का सम्मान मुख्य अतिथि, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य द्वारा किया गया। यज्ञ ब्रह्मा गुरुकुल कालवा के आचार्य श्री राजेन्द्र जी थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री फूल सिंह, मान्धाता सिंह, राकेश कुमार, ब्रह्म प्रकाश यादव एवं राम सहाय जी ने मुख्य भूमिका निभाई।

-सुखबीर सिंह आर्य, प्रधान

राजसूय चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

आर्य प्रतिनिधि सभा गौतमबुद्ध नगर एवं आर्य समाज ग्रेटर नोएडा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 19 जुलाई से 18 अगस्त 2016 को झंडे वाले बाबा मन्दिर, परी चौक ग्रेटर नोएडा में स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के सान्निध्य में राजसूय चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ प्रात: 7 बजे व सांय 3 बजे आरम्भ होगा।

-महेन्द्र सिंह आर्य, अध्यक्ष

राष्ट्र रक्षा महायज्ञ एवं योग सम्मेलन

मासिक पत्रिका अध्यात्म पथ(प.) के तत्त्वावधान में महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद की जयन्ती पर राष्ट्र रक्षा महायज्ञ, विराट कवि सम्मेलन एवं योग सम्मेलन का भव्य आयोजन दिनांक 31 जुलाई सायं 4 से 7 बजे के मध्य आर्य समाज मंदिर पश्चिम विहार नई दिल्ली में किया जा रहा है।

-चन्द्र शेखर शास्त्री, सम्पादक

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली

प्रधान : श्री सुखबीर सिंह आर्य
मन्त्री : श्री मान्धाता सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री ब्रह्म प्रकाश आर्य

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली

प्रधान : श्रीमती उषाकिरण आर्या
मन्त्री : श्री पीयूष शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री शिव कुमार अग्रवाल

प्रेरक प्रसंग

एक निष्ठावान् सपूत महाशय मूलशंकर ऋषिजी को गाली देने पर

देश-विभाजन से पूर्व की बात है। शास्त्रार्थ महारथी पण्डित श्री शान्ति प्रकाश जी के जन्म-स्थान कोट छुट्टा जिला डेरागाजी खाँ में एक पौराणिक कथा वाचक आया। वह अच्छा गायक था। उसने ग्राम की सनातनधर्म सभा से कहा कि मेरे साथ किसी तबलावादक का प्रबन्ध कर दीजिए। फिर कथा का आप लोगों को अधिक आनन्द आएगा। पौराणिक बन्धुओं ने कहा इस ग्राम में कोई तबलावादक नहीं मिलेगा। जब पौराणिक कथावाचक ने तबलावादक के लिए बहुत आग्रह किया तो सनातनधर्म सभावालों ने कहा, आर्यसमाज के एक निष्ठावान् सपूत महाशय मूलशंकरजी बड़े प्रतिष्ठित सज्जन हैं और इस ग्राम में उन्हें ही तबला बजाना आता है, हम उनसे विनती कर देखते हैं।

कुछ पौराणिक भाई आर्यसमाज के लिए समर्पित, सिद्धान्त-निष्ठ, श्री महाशय मूलशंकरजी के पास गये और अपनी समस्या रक्खी। श्री मूलशंकरजी ने कहा, कोई बात नहीं, आपका संकट टाल दूँगा। मैं अपने काम-काज समय पर निपटाकर आपकी कथा में आ जाया करूँगा। तबला बजा दूँगा। कथा आरम्भ हो गई। आर्यसमाज का सपूत उसमें जाकर तबला बजा देते। पौराणिक कथावाचक को पता ही था कि तबला बजानेवाले महाशय आर्यसमाजी हैं। पौराणिक लोगों को तब तक रोटी-पचती नहीं, जब तक ऋषि दयानन्द को दस-बीस गालियाँ न दे लें। ये ईसा और मुहम्मद की तो स्तुति कर सकते हैं, दयानन्द की नहीं। श्री विवेकानन्द स्वामी ने 'प्रभुदूत ईसा' नाम की एक पोथी लिखी है। पौराणिक आरती 'जय जगदीश हरे' के रचयिता श्रद्धाराम फिलौरी ने ईसाई की स्तुति में पैसे लेकर गीत रचे। यह सब-कुछ ये लोग करेंगे, परन्तु ऋषि दयानन्द को गाली देना इनका स्वभाव बन चुका है।

उस पौराणिक कथावाचक ने, यह जानते हुए भी कि तबला बजानेवाले महाशयजी आर्यसमाज के सैनिक हैं, कथा करते-करते बिना किसी प्रसंग के ऋषि दयानन्दजी महाराज को गालियाँ देनी आरम्भ कर दीं। किसी ने उन्हें रोका-टोका नहीं, महाशय मूलशंकरजी ने दो-तीन रुका तो आपने तबला उठाकर उस कथावाचक के सिर पर यह कहते हुए दे मारा, ''मेरे होते हुए तुम महान् परोपकारी, वेदोद्धारक, निष्कलंक, बालब्रह्मचारी दयानन्द को गालियाँ देते हो।''

ऐसी गर्जना करते हुए ऋषिभक्त मूलशंकरजी पौराणिकों की सभा को चीरते हुए बाहर आ गये। सभा में सन्नाटा छा गया। सब जन उनके भाव को देखकर चकित रह गये। ऐसे थे वे शूरवीर जो आर्यसमाज की नींव का पत्थर बनने का गौरव प्राप्त कर पाये। इन महाशयजी ने दीर्घ आयु पाई। शास्त्रार्थमहारथी पण्डित शान्तिप्रकाशजी पर धर्म का गूढ़ा रंग चढ़ानेवाले भी यही थे।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

साहित्य एवं समाज शास्त्रीय बोध विविध आयाम'' ग्रंथ का लोकार्पण

साहित्यकार एवं वैदिक चिन्तक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन जनकपुर बी-2 ब्लाक स्थित आर्य समाज मंदिर में किया गया। उनके सम्मान में प्रकाशित ''साहित्य एवं समाज शास्त्रीय बोध विविध आयाम'' शीर्षक ग्रंथ का लोकार्पण प्रख्यात साहित्यकार-विशेषज्ञ डॉ. रमानाथ त्रिपाठी ने किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि 'जयतु हिन्दू विश्व' मासिक पत्रिका के सम्पादक डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी थे। इस अवसर पर डॉ. कथूरिया को अभिनन्दन पत्र भेंटकर 'साहित्य-गौरव' एवं 'पत्रकार-शिरोमणि' की मानद उपाधियों से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यकार, कवि, समाजसेवी, पत्रकार आदि उपस्थित थे।

- संयोजक

विद्यार्थी अवार्ड दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद के तत्त्वावधान में 15 जुलाई 2016 को विद्यार्थी अवार्ड दिवस का आयोजन महात्मा कन्हैया लाल महता सभागार, के. एल. महता दयानन्द महिला महाविद्यालय में प्रात: 8:30 से 11 बजे तक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने की।

-महामन्त्री

चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ एवं ध्यान योग शिविर

श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुलाश्रम ब्रजघाट, गढ़ मुक्तेश्वर, हापुड़ में 19 जुलाई से 31 जुलाई तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं ध्यान योग साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर जी, भजनोपदेश आचार्य देव आर्य एवं आचार्य सतीश सत्यम् जी के होंगे। कार्यक्रम का समापन समारोह 31 जुलाई को प्रात: 8:30 से 11 बजे तक आयोजित किया जाएगा।

-आचार्यविकास तिवारी
संस्थापकाध्यक्ष

सेवक चाहिए

आर्यसमाज प्रशान्त विहार दिल्ली के लिए एक योग्य सेवक की आवश्यकता है। आवास सुविधा के साथ उचित मानदेय प्रदान किया जाएगा। इच्छुक महानुभाव मो.नं. 9811849523 पर सम्पर्क करें।

- एस.एल. मुखी, मन्त्री

आर्य विद्या परिषद दिल्ली के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

मंत्रोच्चारण
28 जुलाई 2016 प्रात: 9:00 बजे
आर्य पब्लिक स्कूल, आर्य समाज प्रीत विहार, दिल्ली-92

एकांकी प्रतियोगिता
2 अगस्त 2016 प्रात: 9:00 बजे
महर्षि दयानंद प. स्कूल न्यू मोती नगर, नई दिल्ली-110015

नुक्कड़ नाटक
9 अगस्त 2016 प्रात: 9:00 बजे : दयानन्द आदर्श विद्यालय
आर्य समाज तिलक नगर, नई दिल्ली-110018

भाषण प्रतियोगिता
24 अगस्त 2016 प्रात: 9 बजे : लालीबाई बाल विद्यालय
दयानन्द वाटिका, राम बाग, नई दिल्ली-110007

समूह गान प्रतियोगिता
30 अगस्त 2016 प्रात: 9 बजे : बिड़ला आर्य कन्या
सी. सै. स्कूल बिड़ला लाइंस दिल्ली-7

आप सबसे निवेदन है कि आप अपने एवं अपने विद्यालयों के बच्चों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। अधिक जानकारी के लिए 9810061263, 9868233795 पर सम्पर्क करें।- ***प्रस्तौता***

शोक समाचार

सुप्रसिद्ध समाजसेवी, उद्योगपति, आर्यनेता श्री मुंशीराम जी सेठी नहीं रहे

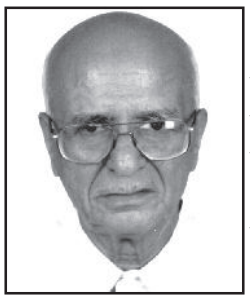

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के वरिष्ठ सदस्य, वेद संस्थान के पदाधिकारी, वरिष्ठ उद्योगपति, समाजसेवी, फ्रन्टियर बिस्कुट के चेयरमैन श्री मुंशीराम जी सेठी का शनिवार दिनांक 16 जुलाई, 2016 को लगभग 86 वर्ष की आयु में अकस्मात देहावसान हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धाजंलि सभा सोमवार 18 जुलाई, 2016 को श्रद्धानन्द सामुदायिक केन्द्र राजौरी गार्डन में सम्पन्न हुई जिसमें, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा तथा अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री मुंशी राम सेठी जी ने भारत विभाजन के उपरान्त उन्होंने दिल्ली को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और फ्रन्टियर के नाम से अपनी बिस्कुट फैक्टरी आरम्भ की। आज फ्रन्टियर नाम और मुंशी राम जी का काम विश्व में प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने औद्योगिक जीवन के साथ सामाजिक जीवन में भी सामंजस्य बनाए रखा और अपने परिवार के सभी सदस्यों को आर्यसमाज एवं वैदिक विचारधारा से जोड़ा। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 18 जुलाई से रविवार 24 जुलाई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21 जुलाई/ 22 जुलाई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 जुलाई, 2016

पृष्ठ 4 का शेष

महात्मा आनन्दमुनि जी.....

में जुट गए, अनेक महापुरुषों के सत्संग से इनके मन में ऋषि दयानन्द सरस्वती के द्वारा बतलाए गए वैदिक मार्ग की ओर समाज के पथ-भ्रष्ट लोगों को लाने का संकल्प जागृत हुआ।

वानप्रस्थी होते हुए इन्होंने स्वयं को तपस्वी जीवन में ढालना आरम्भ कर दिया था। भोर वेला से पूर्व जागना, ध्यान, प्राणायाम, दोनों वेला में संध्या, दैनिक अग्निहोत्र, उर्दू भाषा में पारंगत होते हुए भी संस्कृत एवं हिन्दी में वैदिक साहित्य का निरन्तर स्वाध्याय करते हुए लेखनकार्य, आर्य समाज में जाकर विद्वान पुरोहितों से चर्चा करना आदि अपने जीवन का नित्यकर्म बना डाला। अपने इस नवजीवन में इन्हें आर्य जगत के तपोनिष्ठ संन्यासी, इतिहासविद्, शिक्षाविद् और राजनैतिक महापुरुष स्वामी ओमानन्द सरस्वती, विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी अमरस्वामी, स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती, स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, धर्ममुनि दुग्धाहारी आदि श्रेष्ठ महापुरुषों का स्नेहमयी सानिध्य व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। हिन्दी और संस्कृत भाषा सीखकर धर्म प्रचार और अनेक लेख तथा पुस्तकों का सृजन किया।

मधुर प्रकाशन के स्वामी राजपाल सिंह शास्त्री जी व इनके सुपुत्र मधुर प्रकाश शास्त्री ने मुनि जी की अनेक रचनाओं की पाण्डुलिपियों को देखा तो उन्होंने इन रचनाओं का प्रकाशन अपने संस्थान से किए जाने का निर्णय लिया। मुनि जी द्वारा रचित आनन्द रत्न, सन्ध्या रहस्य, वैदिक संस्कार रहस्य (दो भाग) एवं तत्त्वज्ञान प्रमुख पुस्तकें हैं। आनन्दमुनि वानप्रस्थ जी के व्यक्तित्व की एक प्रेरणादायक विशेषता यह थी कि श्रेष्ठ विद्वानों से अर्जित ज्ञान-रहस्यों को अपने जीवन में ढालने के उपरान्त ही किसी अन्य को उस विषय पर उपदेश करते थे। 27 जुलाई 1999 (श्रावण बदी द्वादशी) के दिन हृदयाघात से इनकी आक्समिक मृत्यु होजाने के कारण इनके अधूरे कार्यो के साथ-साथ अनेक लघु लेख तथा गीता का व्यावहारिक ज्ञान नामक पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हो सकी।

अपकी ही प्रेरणा एवं स्मृति स्वरूप अभी तक आपके परिवार में नियमपूर्वक वैदिक परम्पराओं का पालन करते हुए दैनिक यज्ञ तथा सन्ध्या प्रार्थना नियमित रूप से की जा रही है। इनके सुपुत्र श्रीमान आजाद सिंह जी, श्री महेन्द्र सिंह जी व श्री राजेन्द्र सिंह जी विभिन्न आर्य समाजों एवं परिवार के सभी सदस्य आर्य परिवारों की सेवा में निरंतर संलग्न हैं। वैदिक विद्वानों, प्रचारकों एवं आर्य महानुभावों के प्रति परिवार के सभी सदस्यों का अपार स्नेह तथा आतिथ्य की भावना अतुलनीय है। **-डॉ. हरिदेव शास्त्री,**
विकासपुरी, नई दिल्ली

प्रतिष्ठा में,

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए 'आर्य सन्देश' में एक नय स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** प्रारम्भ किया गया है।

यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिख भेजिए हमारा पता है- 'आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 या aryasabha@yahoo.com द्वारा ईमेल से भी भेज सकते हैं। ***-सम्पादक***

स्वास्थ्य चर्चा

बालों का असमय गिरना

आजकल बड़ों क्या छोटे-छोटे बच्चों के बाल भी झड़ते देखे गये हैं। प्रस्तुत हैं बालों का असमय झड़ना। रोकने के लिए कुछ कारगर उपाय-

1. तिल या गोले(गरी) के 200 ग्राम तेल में कपूर चूरा 5 ग्राम गर्म तेल में डालकर ठंडा कर इसकी प्रात: सांय बालों में मालिश करें।

2. काला सुर्मा बालों की जड़ों में प्रात: सायं लगाएं।

3. उड़द की दाल 200 ग्राम आमला 100 ग्राम शिकाकाई 50 ग्राम मेथी 25 ग्राम कूट छान कर इसमें से 25 ग्राम दवा 200 ग्राम पानी में एक घंटा भिगोकर मथ छान कर इससे बालों को धोएं।

4. गेरू, तिल के फूल 20-20 ग्राम कूट छान कर इसमें एक चम्मच दवा पानी में पीसकर बालों पर लगाएं। यह सिर की गंज में भी लाभ करती है।

5. तेल जैतून 60 ग्राम में 2 सूखी जौंक को जलाएं। ठंडा कर इस तेल को छानकर सिर की गंज पर इसकी मालिश करें।

6. हरड का मुरब्बा प्रात: खाली पेट ठंडे दूध या पानी से दो-तीन माह लगातार प्रयोग करें।

7. बड की दाढ़ी 60 ग्राम सूखी कूट कर नारियल तेल 250 ग्राम में 15 दिन डालें रखें। फिर छानकर इसकी सिर में रात को मालिश करें।

बाल चमकदार, मुलायम, काले व लम्बे बनाने के लिए

1. सुहागा 20 ग्राम कपूर 10 ग्राम पीस क 50 ग्राम उबले पानी में डालकर कम गर्म पानी कर इससे बालों को धोएं।

2. आमला पिसा नींबू के रस में घोट कर बालों पर लेप करें। सूखने पर नींबू मिले पानी से धो लें। 2-3 माह लगातार करें।

3. हरे आमलों की गुठली निकाल कर कूट कर छोटे कांच व चीनी मिट्टी के बर्तन में आधा भरें और बाकी आधे हिस्से में तिल का तेल भर दें। आमले काले पड़ जाएं तो तेल छानकर बालों में मालिश 2-3 माह लगातार करें। इससे हाई ब्लड प्रैसर खत्म हो जाता है और दिमाग को तरावट पहुंचती है।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह